डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–25 अप्रैल, 2020)

भारतेन्दु युग की सामान्य प्रवृत्तियाँ

शरतेन्दु युग को 'जागरण युग' या 'राष्ट्रीय–चेतना युग' कह सकते हैं। इस युग में दो बातें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। एक, राष्ट्रीय और सामाजिक चिन्ता–चेतना तथा दूसरे, काव्य–भाषा की समस्या। ये दोनों बातें व्यापक रूप में दिखलायी पड़ती हैं। भारतेन्दु स्वयं गद्य के बहुत बड़े समर्थक थे। गद्य के क्षेत्र में इनका योगदान ऐतिहासिक और अविस्मरणीय है। उन्होंने गद्य के क्षेत्र में नाटकों का साम्राज्य खड़ा किया और निबंध, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, प्रहसन, व्यंग्य और पत्र–पत्रिकाओं का जखीरा खड़ा करने के लिए एक मंडली की स्थापना की, जिसे ''भारतेन्दु मंडली'' कहा गया। इस मंडली ने बड़ी मात्रा में हिन्दी गद्य साहित्य की रचना कर साहित्य के विकास में अभूतपूर्व योगदान किया। इसी से भारतेन्दु 'खड़ी बोली हिन्दी गद्य के जनक' कहे जाते हैं। पद्य या काव्य के लिए वे ब्रजभाषा के समर्थक थे। ब्रजभाषा लंबे समय से साहित्य और आम जनों की भाषा थी। ब्रजभाषा तत्कालीन युग की निज भाषा थी। उसमें निजता, ममत्व, कोमलता, अपनत्व, गेयता और भारतीयता की पहचान और खुषबू निहित है। इसी से वे पद्य में ब्रजभाषा के समर्थक थे। खड़ी बोली हिन्दी गद्य का व्यापक विकास हो और उसकी स्थिति अंग्रेजी से बेहतर हो इसके लिए वे जीवन भर अथक प्रयास करते रहे। उन्हें पर्याप्त सफलता मिली और इसकी सूचना उन्होंने 1873 ई0 में दी– ''हिन्दी नये चाल में ढ़ली।''

उन्होंने ब्रिटिष साम्राज्य के षोषण, अन्याय, लूट, झूठ और फूट की नीति को करीब से देखा और समझा था। अपने फायदा के लिए ही सही अंग्रेजों ने जब आधुनिक रेल, डाक, तार और अन्य वैज्ञानिक उपकरणों को भारत में व्यवस्थित किया तो वे बेहद खुष हुए। अंग्रेजों के उस योगदान की खुषी में उन्होंने अंग्रेजों का जयगान किया। उसके द्वारा किये गये भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक षोषण के खिलाफ भी स्वर बुलंद किया। अंग्रेजी को जबरदस्ती थोपने के भाषायी प्रहार को लेकर उन्होंने 'निज–भाषा' के प्रयोग और उसकी उन्नति पर बल दिया। उन्होंने ब्रिटिष साम्राज्य के विरुद्ध खुलेआम अपनी भाषानीति के माध्यम से साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का इजहार किया– *''निज भषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।''*

भारतेन्दु आधुनिक हिन्दी साहित्य के अग्रदूत एवं विलक्षण प्रतिभा संपन्न रचनाकार थे। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण तथा सांस्कृतिक चेतना को जन–जन तक पहुंचाने के उद्देष्य से हिन्दी में नाटक की षून्यता को पाटते हुए 'नाटक' को मुख्य विधा के रूप में चुना। यह उस युग के लिए बहुत बड़ी घटना थी। नाटक के क्षेत्र में संस्कृत के कालिदास के बाद भारतेन्दु हिन्दी के कालिदास बने। गालिब, दाग, हाजी, अकबर इलाहाबादी, माईकेल मधुसूदन दत्त,

हेमचन्द्र और रवीन्द्रनाथ ठाकुर इन सबकी कला का विकास भारतेन्दु के समय में हुआ। उनके युग के प्रायः रचनाकार मुख्यतः पत्रकार, निबंधकार, समाज सुधारक और प्रचारक थे। इनके पिता बाबू गोपाल चन्द्र 'गिरिधर दास' एक प्रतिष्ठित कवि और नाटककार थे। उन्होंने पद्यबद्ध नाटक 'नहुष' की रचना की।

भारतेन्दु का जन्म 9 सितम्बर, 1850 ई0 में हुआ था और इनकी मृत्यु 2 जनवरी, 1885 ई0 में हुई। महज 34 वर्ष 3 माह 23 दिन में उन्होंने एक युग कायम किया, एक मंडली तैयार की और 20 नाटक, 8 आख्यान, 27 काव्यग्रंथ, 18 परिहास–प्रहसन, 8 अनुवाद और 8 धर्म इतिहास संबंधी लेख, 2 पत्रिकाओं का संपादन तथा अन्य अनेक लेख लिखे जो 'भारतेन्दु ग्रंथावली' के नाम से प्रकाषित है। इसे देखकर लगता है कि उन्होंने 'समय' के महत्त्व को केवल समझा ही नहीं बल्कि सर आइजक न्यूटन के गति सिद्धांतों के अनुकूल समय की गति के साथ गतिमान थे। न्यूटन का मानना था कि मनुष्य को गति के साथ यदि फेंक दिया जाय तो वह कभी बूढ़ा नहीं होगा, वह समय के साथ गतिमान होगा। भारतेन्दु गतिषील रचनाकार थे। उनकी भावुकता और रसिकता हिन्दी रचनाकारों के बीच अद्वितीय है। भारतेन्दु मंडली के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों में बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन, नाथूराम षंकर षर्मा, श्रीधर पाठक आदि मुख्य थे।

भारतेन्दु युग की सामान्य प्रवृत्तियाँ :–

1. राष्ट्रीय चेतना :– भारतेन्दु युग के रचनाकारों में व्यापक देष–प्रेम की भावना थी। अतिषय देष–प्रेम की भावना से वे कभी राजभक्ति की ओर तो कभी देषभक्ति की ओर गतिमान दिखते हैं। अंग्रेजों द्वारा उपलब्ध आधुनिक उपकरणों रेल, डाक, तार और अन्य वैज्ञानिक उपकरणों को देखकर वे एक नये आधुनिक भारत की परिकल्पना में उतराने लगते हैं और भावुकता में बहकर वे निष्छल भाव से अंग्रेजों का गुणगान कर बैठते हैं। भारतेन्दु ने अपने 'रिप्नाष्टक' काव्य में लार्ड रिपन की प्रषंसा की। वहीं अंग्रेज षासकों की कुटिल नीति का खुलकर विरोध किया। अफगानिस्तान विजय के बाद अंग्रेजों ने भारत में दिवाली मनायी तो उसका विरोध करते हुए भारतेन्दु ने लिखा–

'स्ट्रैची, डिजरैली लिटन चितय नीति के जाल।
फँसि भारत जरजर भयौ, काबुल युद्ध अकाल।।

भारत की वर्तमान दुर्दषा को देखकर भारतेन्दु ने आँसू बहाते हुए लोगों में जनजागरण का संदेष फेलाया और जनसाधारण के दिल–ओ दिमाग में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। उन्होंने अपनी व्यथा और चिंता का इजहार करते हुए 'भारत दुर्दषा' नामक रचना में लिखा–

रोवहुं सब मिलिकै आवहु भारत भाई।
हा हा ! भारत दुर्दषा न देखी जाई।।

अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को हिप्नोटाइज करके लूट और षोषण को अंजाम दिया जा रहा था। एक ओर वह अपनी सुविधा के लिए भारत में आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर लोगों में यह भ्रम फेला रहा था कि वह भारत को एक आधुनिक राष्ट्र बना रहा है और उसकी आड़ में भारत को खोखला कर उसे दरिद्रता की ओर धकेल रहा था। इस रहस्य का पर्दाफाष करते हुए उन्होंने लिखा–

''अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेष चलि जात इहै अति ख्वारी।''

अर्थिक संकट की भयावहता भारतेन्दु ने भारत की वीरता को ललकारने के लिए इतिहास बोध को जगाया और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के लिए इतिहास बोध को एक बेहतरीन साधन माना। उन्होंने जनसाधारण में इतिहास बोध के साथ अपने भीतर के हाहाकार को चित्रित किया –

हाय पंचनद, हा पानीपत। अजहुँ रहे तुम धरनि विराजत।।
हाय चित्तौर निलज तू भारी। अजहुँ खरो भारतहिं मँझारी।।

भारतेन्दु पहले कवि थे, जिन्होंने भारत के अतीत गौरव गान के लिए पुराणों से कृष्ण, मुनि व्यास, कपिल मुनि के प्रति क्रोध की प्रतिमूर्ति दुर्वासा ऋषि और षाक्य मुनियों को चुना और उनके माध्यम से भारतीयता एवं राष्ट्रीयता की पहचान का अलख जगाया –

याही भारत मध्य में रहे कृष्ण मुनि व्यास।
जिनके भारत गान सों भारत बदन प्रकास।।
याही भारत में रहे कपित सूत दुरवास।
याही भारत में भये षाक्यसिंह संन्यास।।

2. **सांस्कृतिक चेतना** :– भारतेन्दु को अपना देष और अपनी भाषा और संस्कृति बेहद प्यारी थी। वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। किसी भी तरह की गुलामी उन्हें पसंद नहीं थी। भारतीय संस्कृति के ध्वंस की आकांक्षा से अंग्रेजों ने जब भारत पर 'अंग्रेजी' भाषा का बोझ लादकर हिन्दी–उर्दू का विवाद पैदा किया और मुसलमान उर्दू की स्थापना की चेष्टा करने लगे तो भारतेन्दु चोट खाकर षोकसंतप्त वाणी में अपनी भाषा के महत्त्व और भारतीय संस्कृति की पहचान को रेखांकित करते हुए लिखा –

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

उर्दू को दबाने के लिए भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य के विकास पर बल दिया। भषा न केवल संस्कृति की बल्कि किसी राष्ट्र की निजी पहचान होती है। इस पहचान को प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने उर्दू का खुलकर विरोध किया और लिखा–

''हैं हैं उर्दू हाय ! हाय ! कहाँ सिधारी हाय ! हाय !!''

3. **समाज सुधार की भावना** :– भारतीय समाज की खस्ताहाल स्थिति से भारतेन्दु और उनकी मंडली के प्रायः सभी लोग चिन्तित दिखलायी पड़ते हैं। राधाचरण गोस्वामी के हाहाकार को देखें –

मैं हाय हाय दै धय पुकारों रोई,
भारत की डूबी नाव उबारो कोई।

इसी तरह बालमुकुन्द गुप्त ने समाज सुधार, आर्थिक विषमता और राजनीतिक परतंत्रता को लेकर स्वदेषी आंदोलन का समर्थन करते हुए लिखा है –

अपना बोया आप ही खावें, अपना कपड़ा आप बनावें।

माल विदेषी दूर भगावें, अपना चरखा आप चलावें ।।
बढ़े सदा अपना व्यापार, चारों दिस हो मौज बहार।

4. **प्रेम की अभिव्यक्ति** :– भारतेन्दु के काव्य 'प्रेम सरोवर', 'प्रेम तरंग', 'प्रेमाश्रु', 'प्रेम माधुरी' आदि में सूक्ष्म, सात्विक, एकनिष्ठ, निष्काम प्रेम का आदर्ष देखने को मिलता है। एक चित्र देखें–

एकांगी बिनु कारने इक रस सदा समान।
पियहि गनै सर्वस्व जो सोई प्रेम प्रमान।

5. **हास्य–व्यंग्य का चित्रण** :– भारतेन्दु ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से अनेक अनबूझे सत्य का उद्‌घाटन किया है। 'बन्दर सभा', 'नये जमाने की मुकरी', 'पाखण्ड विडम्बनम्', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' और 'अंधेर नगरी' आदि रचनाओं में हास्य–व्यंग्य की प्रवृत्ति दिखलायी पड़ती है। हास्य–व्यंग्य के माध्यम से भारतेन्दु ने समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक चेतना, षोषण–दमन और कुटिल, विस्तारवादी नीति के प्रतीक अंग्रेजों के षड्‌यंत्रों का पर्दाफाष करते हुए राष्ट्रीय चेतना का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने स्पष्ट रूप में भारतीयों का हो रहे षोषण और चौपट हो रहे धंधों का उल्लेख करते हुए लिखा–

लूटि विलायत भारत खाय। माल ताल बहु विधि फैलाय।।

इस प्रकार भारतेन्दु युग के निर्भिक रचनाकारों ने अपने साहित्य रचना से एक ओर साहित्य का भंडार बढ़या तो दूसरी तरफ खड़ी बोली हिन्दी गद्य को स्थापित किया। उन्होंने एक ओर हिन्दी–उर्दू का विवाद मिटाया वहीं दूसरी ओर हिन्दी साहित्य का विकास कर एक युग कायम किया। उन्होंने एक ओर नाटक की षून्यता को मिटाया तो दूसरी तरफ हिन्दी में व्यंग्य और आलोचना को उत्कर्ष प्रदान किया। एक ओर देष–प्रेम तथा समाज सुधार जैसे नये विषयों को साहित्य का विषय बनाया वहीं दूसरी ओर प्राचीन भाषा, भाव और छन्द को अपनाया। एक ओर सामाजिक सुधार की तलफन है वहीं दूसरी ओर जीवन और साहित्य को एक साथ स्थापित करने की व्याकुल कोषिष। इस युग के साहित्य का महत्त्व राष्ट्रीयता, गुलामी और षोषण की चिन्ता, समाज सुधार तथा जीवन और साहित्य का निकट संबंध स्थापित करने में है। कविता का महत्त्व जीवन और साहित्य के अनुषीलन में है। गद्य और नाटक के क्षेत्र में भारतेन्दु अकेले खड़े हैं वहीं कविता के क्षेत्र में भारतेन्दु, प्रेमधन और बालमुकुन्द की रचनाएं काफी सरस एवं मधुर हैं।

दिनांक : 25/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**